2. **विद्यार्थी को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की जानकारी देना** -निर्देशन के द्वारा विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के संस्थानों व प्रशिक्षण केन्द्रों से परिचित होता है जिससे उसे अच्छे प्रशिक्षण केन्द्रों के बारे में जानकारी मिलती है तथा वह उनके गुण-दोषों से परिचित हो पाता है और उपयुक्त प्रशिक्षण संस्थान का चुनाव कर पाता है। किसी भी विद्यार्थी का भविष्य उसके व्यावसायिक प्रशिक्षण पर निर्भर है। यदि वह किसी अच्छे संस्थान से जुड़ता है तो उसकी उपलब्धि एवं प्रदर्शन पर इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है और वह उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होता है। अतः व्यावसायिक निर्देशन छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अत्यावश्यक है।
3. **विद्यार्थी में व्यवसाय के अनुकूल वैयक्तिक गुणों का विकास करना** -प्रत्येक प्रकार के व्यवसाय के लिए व्यक्ति में कुछ निश्चित वैयक्तिक गुणों का होना आवश्यक है। जैसे एक कुशल अध्यापक को एक कुशल वक्ता होना जरूरी है। इसी प्रकार एक प्रबन्धक में समय समायोजन की क्षमता होनी चाहिये। व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा व्यक्ति में इन्हीं वैयक्तिक गुणों का विकास किया जाता है।
4. **व्यवसाय चयन के बाद विद्यार्थी में व्यवसाय के साथ अनुकूलन का विकास करना** -व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा व्यवसाय का चयन करने के उपरान्त किसी भी व्यक्ति की सबसे बड़ी अपेक्षा यह होती है कि उसमें वे सभी गुण हों जो व्यवसाय के लिये आवश्यक हैं। यद्यपि किसी भी विद्यार्थी को व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा उसी व्यवसाय का चयन करने की सलाह दी जाती है जिससे सम्बन्धित योग्यतायें या गुण उसमें पहले से ही मौजूद होते हैं। लेकिन यह भी आवश्यक नहीं है कि व्यवसाय से सम्बन्धित प्रत्येक गुण उसमें हो। कुछ गुण उसमें पहले से हो सकते हैं जबकि कुछ का विकास व्यवसायिक निर्देशन के द्वारा करके उसमें व्यवसाय के प्रति अनुकूलता विकसित की जाती है। जैसे - यदि कोई अध्यापक कुशल वक्ता तो है लेकिन वह समय का पाबन्द नहीं है और वह प्रक्रम (Period) में समय से नहीं पहुंच पाता तब उसके इस योग्यता और ज्ञान का लाभ तो विद्यार्थियों को नहीं मिल पाता जिसके आधार पर उसका चयन किया गया। तब व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा उसमें व्यवसाय के अनुरूप गुणों का विकास किया जाता है।
5. **व्यवसाय के प्रति ईमानदारी, समर्पण एवं रुचि का विकास करना** -व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा व्यक्ति में न केवल व्यावसायिक गुणों को विकसित किया जाता है बल्कि व्यक्ति में व्यवसाय के प्रति ईमानदारी, समर्पण एवं रुचि का भाव भी विकसित किया जाता है क्योंकि इन तीनों के बिना कोई भी व्यक्ति उपने व्यावसायिक क्षेत्र में उच्चतम सीमा पर नहीं पहुंच सकता। जैसे यदि किसी प्रबन्धक को प्रबन्धन के सभी अंगों - नियोजन, संगठन, प्रबन्धन एवं नियन्त्रण का तो पूर्णरूपेण ज्ञान है लेकिन जिस कम्पनी में वह कार्य कर रहा है उसकी उन्नति में उसे कोई रुचि नहीं है, उसके प्रति उसमें समर्पण का भाव नहीं है, तो वह अपने इन गुणों का उपयोग उसकी उन्नति में नहीं करेगा और कम्पनी उसके इस कौशल से

Scanned with CamScanner

पिछड़ने का भय सदैव बना रहता है। व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा हम प्रशिक्षणार्थी को तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराते हैं जिससे वह अपने व्यवसाय से सम्बन्धित तकनीकी का अधिकतम एवं समुचित उपयोग कर सके। इस प्रकार व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से तकनीकी का उपयोग एवं तकनीकी ज्ञान के माध्यम से व्यवसाय विशेष में सफलता का मार्ग खुलता है।

8. **यन्त्रीकरण के कारण आवश्यक** -अनेक विद्वानों की मान्यता है कि वर्तमान युग को कलयुग कहने का कारण 'कल' (मशीन अथवा यन्त्र) का अधिकतम उपयोग है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि यह युग मशीनों का युग है। मानव समाज निरन्तर यन्त्रों पर अधिक से अधिक आश्रित होता जा रहा है। हमारी लगभग प्रत्येक क्रिया यन्त्रों के बिना अपेक्षाकृत कठिन प्रतीत होती है। किसी भी दूसरे क्षेत्र की ही भांति व्यावसायिक क्षेत्र में अत्यधिक यन्त्रीकरण हुआ है। विविध यन्त्रों का समुचित उपयोग जाने बिना कोई भी व्यक्ति अपने व्यवसाय में कैसे सफल हो सकता है? व्यावसायिक निर्देशन हमें यन्त्रों का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराता है। व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से हम यन्त्रों का प्रयोग करके सफलता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ जाते हैं।
9. **परिस्थिति परिवर्तन में सहायक** -एक कहावत है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास है। किन्तु व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा इस कहावत को उल्टा किया जा सकता है। व्यावसायिक निर्देशन हमारे अन्दर उस क्षमता का विकास कर देता है कि विपरीत परिस्थितियों कों भी हम अपने अनुकूल बना सकते हैं। एक उदाहरण के द्वारा इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है –

   एक बार कागज बनाने वाली एक बड़ी कम्पनी में श्रमिकों की गलती के कारण कागज बनाने की सारी प्रक्रिया का पालन न हो सका। भूलवश श्रमिक बने हुए कागज को बिना चिकना किये ही पैक कर गये। विपणन (बिक्री) के लिए पहुंचने पर इस भूल का पता लगा ओर कम्पनी के सामने करोड़ों रुपये के घाटे की समस्या खड़ी हो गयी। किन्तु कम्पनी के प्रबन्धक ने विशेषज्ञों से विचार किया और इस समय ब्लॉटिंग पेपर (स्याही सोख्ता) अस्तित्व में आया। इस प्रकार व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा हम हानि को लाभ में बदल सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल परिस्थितियों में बदला जा सकता है।

2.5.2 व्यावसायिक निर्देशन के उद्देश्य

लेखक के मतानुसार व्यावसायिक निर्देशन के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं-

1. **विद्यार्थी को विभिन्न व्यवसायों से परिचित कराना**- व्यावसायिक निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी को विभिन्न व्यवसायों से परिचित कराना है। व्यावसायिक निर्देशन विद्यार्थियों को अनेक प्रकार के व्यवसायों से परिचित कराता है जिससे वे अपनी व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखकर व्यवसायों का चुनाव कर सके।

Scanned with CamScanner

2.5.1 व्यावसायिक निर्देशन का महत्त्व

व्यावसायिक निर्देशन, जैसा कि परिभाषा से स्पष्ट है, व्यवसाय के चयन से आरम्भ होता हुआ व्यवसाय के प्रत्येक चरण एवं घटनाक्रम में आवश्यक है। आज के भौतिकतावादी एवं तकनीकी युग में व्यवसाय ने ऐसे-ऐसे क्षेत्रों में अपने पाँव पसार लिये हैं जिनके बारे में कुछ समय पूर्व तक कल्पना करना भी असम्भव था। आज व्यवसाय का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि उसने धर्म, आध्यात्म और व्यक्तियों के नितान्त व्यक्तिगत जीवन को भी नहीं छोड़ा। पश्चिमी देशों सहित भारत ने भी मानव को संसाधन बनाकर आग में घी डालने का कार्य किया है। ज्यो-ज्यों व्यावसायिकता अपने पांव पसार रही है त्यो-त्यों व्यवसायों से सम्बन्धित जटिलतायें भी बढ़ती जा रही हैं। एक ओर व्यवसायों की संख्या बढ़ने के कारण अवसरों में प्रचुरता आयी है, दूसरी ओर तकनीकी के अत्यधिक विकास ने प्रत्येक व्यवसाय में जोखिम की मात्रा भी अत्यधिक बढ़ा दी है। ऐसी विषम परिस्थितियों में निर्देशन के अभाव में व्यक्ति गलत व्यवसाय का चयन कर सकता है तथा उसमें असफल होने के कारण अवसाद का शिकार हो सकता है। ऐसी परिस्थितियाँ तथाकथित मानव रूपी संसाधनों के विकास में बाधक ही बनेंगी। अतः आज व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्त्व पहले की अपेक्षा अत्यधिक बढ़ गया है। व्यावसायिक निर्देशन के महत्त्व की सीमित समय में विषद् चर्चा करना असम्भव है। अतः यहां हम व्यावसायिक निर्देशन के महत्त्व से सम्बन्धित कुछ महत्त्व पूर्ण बिन्दुओं पर संक्षेप में चर्चा करेंगे-

1. **व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार व्यवसाय के चयन में सहायक** -भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न भिन्न प्रकार के व्यक्तिगत गुण पाये जाते हैं, जैसे व्यक्तियों में सहनशीलता, धैर्य, वाक्कुशलता, बाहरी आकर्षक व्यक्तित्व आदि। यदि व्यक्ति को उसके व्यक्तिगत गुणों के अनुरूप व्यवसाय चयन में उपयुक्त निर्देशन दिया जाये तो वह अन्य व्यवसायों की अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन करेगा। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति में समय प्रबन्धन की क्षमता अच्छी है तो वह किसी भी कम्पनी के लिये अच्छा प्रबन्धक साबित हो सकता है। प्रबन्धक के अन्य गुणों का विकास वह व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा कर लेगा।
2. **व्यवसायों की अनेकरूपता के कारण आवश्यक** -तकनीक के विकास के कारण आज व्यवसायों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। आज विशेषीकरण का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यवसायगत बारीकियों के कारण विशेषज्ञता अनिवार्य हो गयी है। अतः बिना उपयुक्त व्यावसायिक निर्देशन के अपनी अपेक्षाओं और सामर्थ्य के अनुकूल व्यवसाय का चयन करना असम्भव कार्य है। साथ ही व्यवसाय के चयन के उपरान्त किसी भी व्यवसाय में सफलता के लिये भी व्यावसायिक निर्देशन अत्यावश्यक है।
3. **व्यवसाय एवं व्यक्ति की प्रकृति में समानता की खोज** -प्रत्येक व्यवसाय प्रत्येक व्यक्ति के लिये नहीं बना। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति किसी व्यवसाय विशेष में ही सफल हो सकता है क्योंकि जब तक व्यवसाय एवं व्यक्ति की प्रकृति समान

Scanned with CamScanner

नहीं होगी, तब तक व्यक्ति को सम्बन्धित व्यवसाय में सफलता नहीं मिलेगी। उदाहरण के लिये शिक्षण का व्यवसाय करने वाले व्यक्ति में वक्तृत्व कला (बोलने की कला) एवं अध्ययनशीलता का गुण होना अनिवार्य है। इसी प्रकार तकनीकी रुचि रखने वाले विद्यार्थी को इंजीनियरिंग का व्यवसाय अपनाना चाहिये। समान प्रकृति के व्यक्ति एवं व्यवसाय को खोजने का काम व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा ही सम्भव है।

4. **व्यक्ति की रुचि एवं क्षमता के अनुरूप व्यवसाय का चयन** -जैसा कि हम ऊपर भी कह चुके हैं, प्रत्येक व्यक्ति किसी भी व्यवसाय में सफल हो जाये यह आवश्यक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुरूप व्यवसाय का चयन करना अनिवार्य होता है। उदाहरण के लिये शिक्षण कार्य (व्यवसाय के लिये) करने वाले व्यक्ति की प्रकृति बहिर्मुखी होनी चाहिये। किन्तु केवल बहिर्मुखी प्रकृति का स्वामी शिक्षण व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर ले यह अनिवार्य नहीं है। अपितु उस व्यक्ति में शिक्षक बनने की क्षमता भी होनी चाहिये। इतना ही नहीं शिक्षण व्यवसाय के प्रति रुचि का अभाव भी व्यक्ति को शिक्षण व्यवसाय मे सफल होने से वंचित कर देगा। अतः व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से हमें व्यक्ति को उसकी क्षमता एवं रुचि के अनुरूप व्यवसाय चयन करने का अवसर मिलता है।

5. **आत्म संतुष्टि** - युवा वर्ग प्रायः आकर्षक वेतन को आधार बनाकर ही व्यवसाय का चयन कर लेते हैं। निश्चित रूप से वे भरपूर वेतन भी प्राप्त करते हैं। किन्तु अपने व्यवसाय से असंतुष्ट होने के कारण वे कभी भी स्वयं को सुखी अनुभव नहीं करते और अन्ततः अवसाद के शिकार हो जाते हैं। किसी भी व्यवसाय में आर्थिक सम्पन्नता, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं संसाधनों की प्रचुरता के साथ-साथ आत्मसंतुष्टि का होना भी अनिवार्य है। यही आत्मसंतुष्टि का भाव अवसाद से हमारी रक्षा करता है। हमे किस व्यवसाय में आत्मसंतुष्टि मिलेगी यह केवल व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा ही सम्भव है।

6. **संसाधनों का अधिकतम उपयोग** -किसी भी व्यवसाय में सफलता का महत्त्व पूर्ण सूत्र है सीमित संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना। किसी भी व्यवसाय में संसाधनों पर किया गया व्यय बाद में आय का स्रोत बनता है। अतः व्यवसाय विशेष के लिये एकत्र किये गये संसाधन जितने अधिक प्रयुक्त होंगे, उतना ही अधिक लाभ अमुक व्यवसाय से होगा। सीमित संसाधनों के अधिकतम उपयोग की तकनीक व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। समुचित व्यावसायिक निर्देशन प्राप्त व्यक्ति व्यवसाय विशेष के प्रमुख संसाधनों जैसे समय, श्रम, पूंजी, भूमि आदि का अधिकतम उपयोग करना सीख जाता है। इस प्रकार वह अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है।

7. **तकनीकी उपयोग**- वर्तमान युग जटिलता एवं प्रतिस्पर्धा का युग है। इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में जटिलताओं का एक महत्त्व पूर्ण कारण तकनीकी विकास भी है। अधिकांश व्यवसाय किसी न किसी तकनीकी से सम्बन्धित होते हैं तथा तकनीकी ज्ञान के अभाव में

Scanned with CamScanner